हिंदी कार्यशाला
"प्रशासनिक कार्यों में डिजिटल टूल्स का उपयोग"

सीएसआईआर- केन्द्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान, पिलानी में **23 जुलाई 2014** को प्रशासनिक कार्यों में डिजिटल टूल्स का उपयोग विषय पर एक पूर्ण दिवसीय **हिंदी कार्यशाला** का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में संस्थान के विभिन्न प्रशासनिक अनुभागों तथा वैज्ञानिक व तकनीकी अनुभागों/प्रभागों में कार्यरत सहकर्मियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला में संकाय सदस्य के रूप में श्री राकेश कुमार शर्मा, पूर्व वरिष्ठ उपसचिव, सीएसआईआर, नई दिल्ली को आमंत्रित किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य सहकर्मियों को प्रशासनिक कार्यों में डिजिटल टूल्स के महत्व व उपयोग से परिचित कराना तथा अपने दैनिक कार्यालयी कामकाज में यूनिकोड के माध्यम से प्रतिभागियों को इन टूल्स पर अभ्यास कराना था।

कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में परिषद मुख्यालय से डॉ पूरन पाल, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी (चयन ग्रेड), श्री रोहित गुप्ता, प्रशासनिक अधिकारी, राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य, प्रतिभागीगण तथा अन्य सहकर्मी उपस्थित थे।

अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए श्री राहुल वर्मा, कार्यकारी निदेशक, सीएसआईआर-सीरी, पिलानी

उद्घाटन सत्र के दौरान उपस्थित सहकर्मी

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए संस्थान के **कार्यकारी निदेशक श्री राहुल वर्मा ने** श्री राकेश कुमार शर्मा तथा डॉ पूरन पाल का स्वागत किया तथा संस्थान के निमंत्रण पर यहाँ आने के लिए उनके प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में प्रतिभागियों व अन्य सहकर्मियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि डिजिटल टूल्स की सहायता से कंप्यूटर पर हिंदी का उपयोग बढ़ने की असीम संभावनाएँ हैं। अपने संक्षिप्त उद्बोधन में उन्होंने कहा कि हिंदी हमारी अपनी भाषा है जिसे राजभाषा के रूप में संवैधानिक मान्यता प्राप्त है। हमारी कोशिश रहनी चाहिए कि हम अपने दैनिक कामकाज में इसका अधिकाधिक उपयोग करें। 2 दिसंबर 2013 को संस्थान के संसदीय राजभाषा निरीक्षण की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान के दल के सदस्य के रूप में वे स्वयं भी समिति के समक्ष उपस्थित थे। उन्होंने स्वीकार किया कि निरीक्षण से पूर्व वे स्वयं भी हिंदी में कम कार्य करते थे परंतु उक्त निरीक्षण के बाद न केवल उनके अपितु संस्थान में हिंदी कामकाज में आशातीत वृद्धि हुई है। उन्होंने

आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा कि हम न केवल कार्यालय में अपितु घरों में भी हिंदी में ही बातचीत करते हैं परंतु लिखते समय न जाने क्यों अंग्रेजी हम पर हावी हो जाती है। उन्होंने कहा कि यह केवल मानसिकता की ही बात है और अब समय आ गया है कि हमें अपनी मानसिकता बदलनी होगी। अपने उद्‌बोधन के अंत में उन्होंने कहा कि राजभाषा के प्रचार-प्रसार में डिजिटल टूल्स के उपयोग पर आयोजित की जा रही यह कार्यशाला अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी।

कार्यशाला के उद्‌घाटन सत्र में विशिष्ट व्याख्यान देते हुए डॉ पूरन पाल, व. हिं. अधिकारी (चयन ग्रेड), सीएसआईआर, नई दिल्ली

इस अवसर पर **"परिषद मुख्यालय तथा सीएसआईआर की राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं /संस्थानों में राजभाषा"** विषयक अपने व्याख्यान में प्रतिभागियों तथा उपस्थित सहकर्मियों को संबोधित करते हुए **डॉ पूरन पाल**, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी (चयन ग्रेड) ने राजभाषा अधिनियम 1963, राजभाषा नियम 1976, राजभाषा के संबंध में राष्ट्रपति महोदय के आदेश 1960, राजभाषा संकल्प 1968 आदि के आलोक में संसदीय राजभाषा समिति के गठन, समिति की अपेक्षाएँ व हमारा उत्तरदायित्व आदि विषयों पर प्रकाश डाला। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि संघ की राजभाषा नीति का अनुपालन एक अत्यंत गंभीर तथा महत्वपूर्ण विषय है। संसदीय समिति राजभाषा अधिनियम, नियम आदि की अवहेलना और अपालन को गंभीरता से लेती है। उन्होंने कहा कि यद्‌यपि केंद्र सरकार के अन्य कार्यालयों की अपेक्षा सीएसआईआर और इसकी प्रयोगशालाओं/ संस्थानों में राजभाषा की स्थिति बेहतर है परंतु इस दिशा में अभी बहुत कुछ किया जाना शेष है। अत: हम सभी का यह व्यक्तिगत तथा सामूहिक दायित्व है कि हम राजभाषा नीति का पालन सुनिश्चित करें। अंत में उन्होंने इस अवसर पर आमंत्रित करने के लिए संस्थान के निदेशक के प्रति आाभार व्यक्त किया।

उद्‌घाटन सत्र के दौरान उपस्थित प्रतिभगियों व सहकर्मियों को संबोधित करते हुए श्री आर के शर्मा, पूर्व वरिष्ठ उपसचिव, सीएसआईआर, नई दिल्ली

इस अवसर पर कार्यशाला के संकाय सदस्य **श्री राकेश कुमार शर्मा,** पूर्व वरिष्ठ उपसचिव, सीएसआईआर, नई दिल्ली ने भी स्वयं को संस्थान में आमंत्रित करने के लिए आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर अपने उद्‌बोधन में उन्होंने कहा कि परिषद से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के उपरांत वे देश में राजभाषा की सेवा करने के उद्देश्य से इस क्षेत्र में आ गए। परंतु यह कैसे हुआ, इसका उन्हें भान ही नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि संभवत: यह मुख्यालय में राजभाषा कार्यों से लंबे समय तक जुड़े रहने के कारण हुआ होगा। केंद्र सरकार के कार्यालयों के संसदीय राजभाषा निरीक्षण पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि अब हमें यह भूल जाना चाहिए कि हम राजभाषा हिंदी को अनदेखा करेंगे तो कोई नहीं पूछेगा। समिति अब न केवल संसदीय प्रश्नावली के माध्यम से

निरीक्षण कर रही है अपितु कार्यालयों में जाकर भी दिए गए आँकड़ों की जाँच कर रही है। इसलिए अब राजभाषा की अवहेलना और अपालन करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों से व्यक्तिगत रूप से भी पूछा जाएगा। उन्होंने कहा कि राजभाषा के संबंध में जारी व्यकितश: आदेशों का उल्लंघन अक्षम्य है। इसके लिए संबंधित अधिकारी/कर्मचारी के विरुद्ध अनुशासनिक कार्रवाई भी की जा सकती है।

इस अवसर पर राजभाषा हिंदी में कार्य करने के लिए उपलब्ध डिजिटल टूल्स पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि इन तकनीकी टूल्स की सहायता से हिंदी में कार्य करना सरल हो गया है। अब हम यूनिकोड या गूगल के माध्यम से सरलता से कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि हमने सहजडिजिटल नामक एक संस्था तथा सहजडिजिटल.कॉम नामक एक वेबसाइट तैयार की है जिसमें सभी प्रकार के कार्यालयी पत्राचार आदि के टेम्प्लेट्स तैयार किए गए हैं जिनमें बहुत कम जानकारी/सूचना भर कर न केवल हिंदी /द्विभाषी पत्राचार बढ़ाया जा सकता है अपितु टिप्पण कार्य भी सरलता से किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि हिंदी ई-मेल के द्वारा भी हिंदी पत्राचार की संख्या बढ़ाई जा सकती है। उन्होंने कहा कि टेम्प्लेट्स पर आगामी तकनीकी सत्रों में अभ्यास कराया जाएगा। अपने उद्बोधन के अंत में उन्होंने कहा कि हमारी विश्वास है कि हमने कंप्यूटर पर हिंदी में काम करना सरल किया है और हमारा विश्वास है कि आप इसका लाभ अवश्य उठाएँगे।

इससे पूर्व कार्यक्रम का संचालन करते हुए **डॉ श्याम नारायण मिश्र, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी (चयन ग्रेड)** ने अतिथियों का औपचारिक स्वागत किया तथा सभागार में उपस्थित प्रतिभागियों व सहकर्मियों के समक्ष कार्यशाला के उद्देश्य व महत्व पर प्रकाश डाला।

कार्यशाला का संचालन करते हुए डॉ श्याम नारायण मिश्र, वरिष्ठ हिंदी अधिकरी (च.ग्रे.)

कार्यक्रम की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कहा कि संस्थान में सहकर्मियों के लाभार्थ इस प्रकार की कार्यशालाएँ समय-समय पर आयोजित की जाती हैं तथा इस क्रम में यह 13वीं कार्यशाला है। प्रतिभागियों व अन्य सहकर्मियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि आरंभ में कंप्यूटर तथा इसके टूल्स आदि अंग्रेजी में ही थे लेकिन सरकार ने इसे जनसामान्य तक पहुँचाने व लोकप्रिय बनाने के लिए हिंदी तथा अन्य भाषाओं में करने का निर्णय लिया। उन्होंने बताया कि श्री शर्मा जैसे हिंदी प्रेमी और उत्साही व्यक्ति इस कार्य में अपना सराहनीय योगदान दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि संस्थान भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन के लिए कटिबद्ध है तथा इस दिशा में प्रयासरत है। उन्होंने कहा कि आज का यह आयोजन भी इसी दिशा में एक और बड़ा कदम है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि तकनीकी सत्रों में डिजिटल टूल्स पर अतिथि वक्ता के

व्याख्यान और कराए जाने वाले अभ्यास से हम सभी लाभान्वित होंगे।

उद्घाटन सत्र के अंत में **श्री रमेश बौरा, हिंदी अधिकारी** ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए आमंत्रित अतिथि वक्ताओं व निदेशक महोदय के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने सभी प्रतिभागियों से अपेक्षा की कि वे आगामी सत्रों में अपने दैनिक कार्यालयी कार्यों में विभिन्न डिजिटल टूल्स के उपयोग के संबंध में श्री राकेश कुमार शर्मा जी के अनुभवों का लाभ उठाएँगे तथा यथासंभव जानकारी प्राप्त करेंगे। उन्होंने आयोजन को सफल बनाने में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग देने के लिए सभी सहकर्मियों के प्रति आभार व्यक्त किया तथा प्रतिभागियों से कार्यशाला के आगामी सत्रों में सम्मिलित होकर लाभान्वित होने का आह्वान किया।

उद्घाटन सत्र के अंत में धन्यवाद ज्ञापित करते हुए
श्री रमेश बौरा, हिंदी अधिकारी

कार्यशाला के तकनीकी सत्रों में डिजिटल टूल्स पर रोचक व महत्वपूर्ण व्याख्यान दिए गए जिनका विवरण निम्नवत है :

सत्र 1 सैद्धांतिक पक्ष(23.7.2014 - पूर्वाह्न)

i) यूनिकोड संबंधी सामान्य जानकारी
ii) कंप्यूटर पर यूनिकोड सक्रियण तथा विभिन्न कुंजी पटल विकल्पों की जानकारी
iii) हिंदी में ई-मेल आदि भेजना
iv) विभिन्न शब्दकोश व गूगल अनुवाद

प्रतिभागियों को डिजिटल टूल्स पर अभ्यास कराते हुए
श्री आर के शर्मा, पूर्व वरिष्ठ उपसचिव, सीएआईआर, नई दिल्ली

सत्र2 व्यावहारिक पक्ष(23.7.2014- अपराह्न)

i) फोनेटिक हिंदी टाइपलेखन
ii) समस्याएँ व समाधान
iii) टेम्प्लेट्स पर अभ्यास

कार्यशाला के दौरान प्रतिभागियों तथा उपस्थित सहकर्मियों ने कंप्यूटर पर यूनिकोड सक्रियण, सामान्य तथा फोनेटिक हिंदी टंकण, हिंदी ईमेल आदि के संबंध में प्रश्न पूछे। अतिथि वक्ता ने भी उपस्थित प्रतिभागियों व सहकर्मियों को अत्यंत रोचक एवं सरल तरीके से विभिन्न डिजिटल टूल्स की जानकारी दी तथा उनकी जिज्ञासा शांत की ।

अंत में **श्री रमेश बौरा, हिंदी अधिकारी** ने प्रतिभागियों को डिजिटल टूल्स पर महत्वपूर्ण जानकारी देने व अभ्यास कराने के लिए अतिथि वक्ता को धन्यवाद दिया। कार्यशाला के समापन पर प्रतिभागियों की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए उन्होंने आश्वासन दिया कि भविष्य में भी निदेशक महोदय के मार्गदर्शन में इस प्रकार की कार्यशालाएँ आयोजित की जाती रहेंगी।

इस प्रकार संस्थान में आयोजित हिंदी कार्यशाला संपन्न हुई।